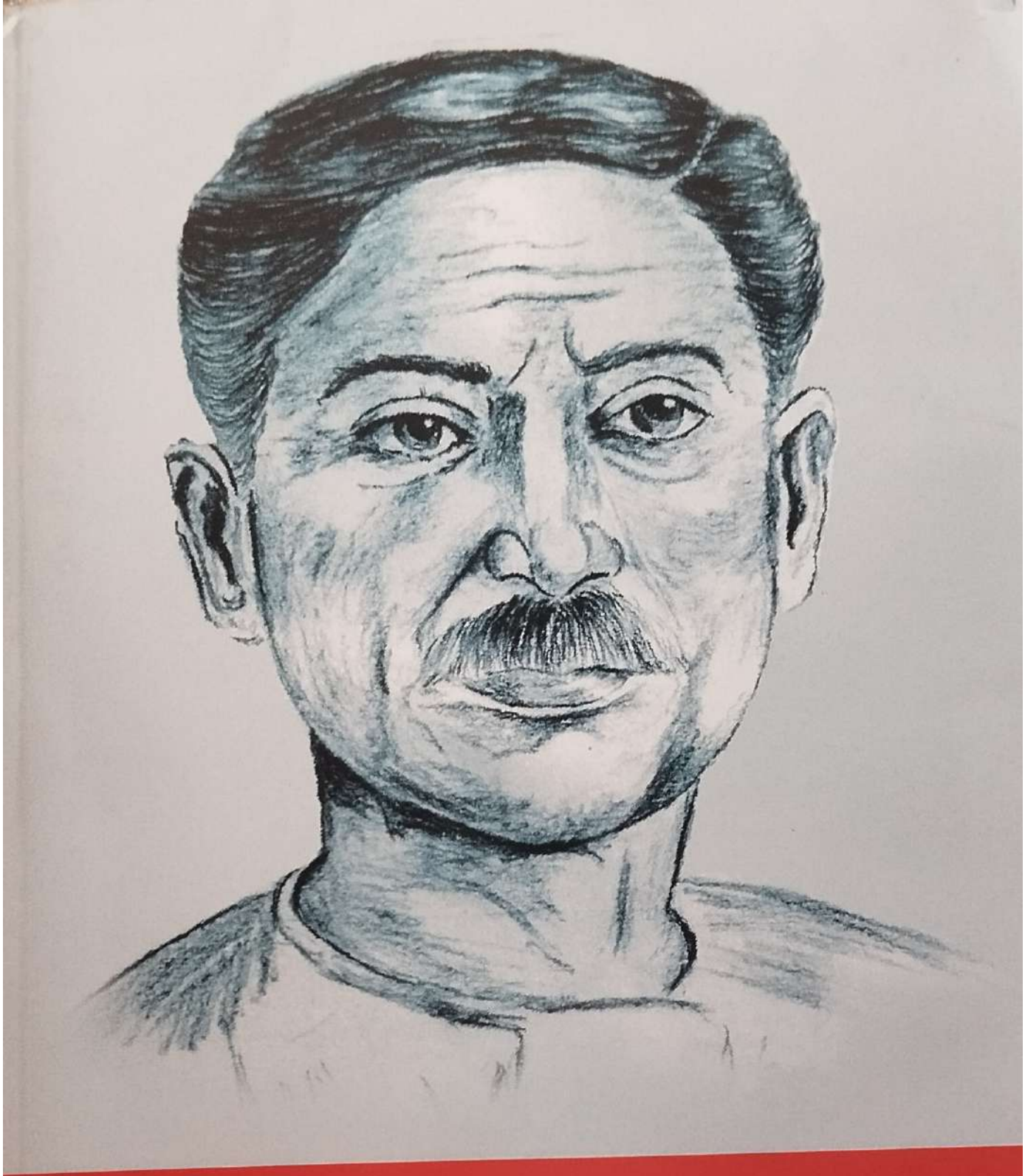


क्रांतिधर्मी प्रेमचंद

संपादक
डॉ. गगन कुमारी हळवार
डॉ. बेंद्रे बसवेश्वर नागोराव

परिकल्पना

© संपादक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN : 978-93-95104-26-5

मूल्य : ₹ 350

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना*, के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ल, दिल्ली से टाइप सेट होकर
काम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

87

12. प्रेमचंद साहित्य में बाल चेतना 93
—डॉ. अनुपमा
13. प्रेमचंद के कथा साहित्य में समकालीन और वर्तमानकालिक प्रासंगिकता 99
—डॉ. कंचन कुडचीकर
14. प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक चेतना 105
—डॉ. गणशेटवार साईनाथ नागनाथ
15. प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना 109
—डॉ. धन्या बी
16. प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना 114
—डॉ. नारायण बागुल
17. प्रेमचंद के कथा साहित्य में मानवीय संवेदना 118
—डॉ. निशा एस
18. प्रेमचंद के साहित्य में मानववाद की अभिव्यंजना 124
—डॉ. प्राची त्रिपाठी
19. 'बलिदान' कहानी : किसान त्रासदी 130
—डॉ. माया सगरे-लक्का
20. गोदान में जीवन-दर्शन 139
—डॉ. रमेशकुमार टण्डन
21. प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री विमर्श : 'निर्मला' के विशेष संदर्भ में 145
—डॉ. राखी के शाह
22. स्त्री विमर्श के आलोक में प्रेमचंद 151
—डॉ. रितु गुप्ता
23. प्रेमचंद के कथा साहित्य में मानवीय संवेदना 154
—प्रो. रुपा पाटील
24. प्रेमचंद के कथा साहित्य में स्त्री जीवन की समस्याएँ 167
—डॉ. रोशन लाल
25. प्रेमचंद की कहानियों में जीवन मूल्य 170
—डॉ. वर्षाराणी जबडे
26. प्रेमचंद की कहानी 'सुहाग की साड़ी' में निहित राष्ट्र प्रेम 175
—डॉ. जयती बिस्वास
27. हिंदी के कथा साहित्य में चित्रित गाँव में स्त्री चेतना
—पटेल निर्मलाबहन ईच्छुभाई

28. प्रेमचंद का सा
—मनोहर सिंह
29. प्रेमचंद की क
—लिपिपुष्पा
30. प्रेमचंद के क
—सिद्धार्थ कु
31. प्रेमचंद के उ
—डॉ. सुशील
32. प्रेमचंद साहि
—डॉ. सुनील
33. प्रेमचंद के
—डॉ. तृप्ति

20. गोदान में जीवन-दर्शन

डॉ. रमेशकुमार टण्डन
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
शास. महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
खरसिया, छ.ग.

हिन्दी उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने 1936 ई. में प्रकाशित अपने अनुपम उपन्यास 'गोदान' में विभिन्न शहरी और ग्रामीण पात्रों के माध्यम से अपने विचारों को शब्दाकार दिया। इसमें मानव जीवन की आधारशिला दिखाई देती है, जीवन की सच्चाई दिखाई देती है, जीवन का कर्कश अनुभव दिखाई देता है, प्रेम का स्पष्ट स्वरूप दिखाई देता है, गाँव की गरीबी और शहर की सच्चाई दिखाई देती है, इसके विभिन्न पात्रों की जुबान पर वाक्पटुता के साथ कटुसत्य के दर्शन होते हैं। कथावस्तु के क्रम को ध्यान में रखते हुए संदर्भ सहित इसके कुछ उद्धरण ऐसे हैं, जिसकी सत्यता की आँच मात्र से हम निखर सकते हैं।

उपन्यास के आरम्भ में पति की महत्ता बताते हुए धनिया कहती है, 'विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी।' पत्नी का महत्त्व बताते हुए भोला कहते हैं, 'बिना घरनी भूत का डेरा।' भोला दूसरी शादी करना चाहता है। इस संबंध में यह कथन दृष्टव्य है, 'आशा में कितनी सुधा है।' तत्कालीन समाज का चरित्र बताते हुए गोबरधन कहता है, 'यहाँ जिसके हाथ में लाठी है, वह गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।' भोला को भूसा पहुँचाने पर परिस्थिति जन्य होरी का कथन इस प्रकार है, 'लाद दे, लदा दे, लादनेवाला साथ कर दे।' छोटे बैल से खेती नहीं होती और बहुएँ घर नहीं सम्भाल सकती। इस संदर्भ में भोला ने होरी से कहा, 'नाटन खेती बहुरियन घर।' होरी मन में विचार करते हैं, 'आदमी कितना स्वार्थी हो जाता है। जिसके लिए लड़ो, वही जान का दुश्मन हो जाता है।' चौधरी, होरी से बांस लेते समय अपनी बहू के बारे में कहते हैं, 'औरत को भगवान सब कुछ दे, रूप न दे,

नहीं वह काबू में नहीं रहती।' बांस के सौदा में हेरा-फेरी होने पर होरी पछताता है, 'जीतकर आप अपनी धोखेबाजियों की डींग मार सकते हैं; जीत पर सब कुछ माफ है। हार की लज्जा तो पी जाने की ही वस्तु है।' गाय लाने के बाद होरी रूपा को, हीरा और शोभा को बुलाने के लिए भेजते हैं। तब लेखक कहते हैं, 'द्वेश का मायाजाल बड़ी-बड़ी मछलियों को ही फंसाता है। छोटी मछलियाँ या तो फंसती ही नहीं या तुरन्त निकल जाती हैं।' झुनिया के प्यार में पड़े हुए गोबर ने बैल लाते समय झुनिया से कहा, 'अगर भिखारी को भीख मिलने की आशा हो, तो वह दिन-भर और रात-भर दाता के द्वार पर खड़ा रहे।' झुनिया गोबर से कहती है, 'मर्द का हरजाईपन औरत को भी उतना ही बुरा लगता है जितना औरत का मर्द को।'

राय साहब के कार्यक्रम में पंडित ओंकारनाथ, राय साहब और मिस्टर तंखा के सामने मेहता कहते हैं, 'गुड़ से मारनेवाला, जहर से मारनेवाले की अपेक्षा कहीं अधिक सफल हो सकता है।.....मैं नकली जिंदगी का विरोधी हूँ।' राय साहब का मत है, 'स्वेच्छा अगर स्वार्थ छोड़ दे, तो अपवाद है।.... उपजीवी होना घोर लज्जा की बात है। कर्म करना प्राणिमात्र का धर्म है। समाज की ऐसी व्यवस्था जिसमें कुछ लोग मौज करें और अधिक लोक पिसें और खपें, कभी सुखद नहीं हो सकती।' मेहता का तर्क है, 'मैं इस सिद्धांत का समर्थक हूँ कि संसार में छोटे-बड़े हमेशा रहेंगे और उन्हें हमेशा रहना चाहिए। इसे मिटाने की चेष्टा करना मानव-जाति के सर्वनाश का कारण होगा।' मेहता कहते हैं, 'आश्चर्य अज्ञान का दूसरा नाम है।' मेहता जी पुनः कहते हैं, 'छोटे-बड़े का भेद केवल धन से ही तो नहीं होता। मैंने बड़े-बड़े धन-कुबेरों को भिक्षुओं के सामने घुटने टेकते देखा है, ...रूप के चौखट पर बड़े-बड़े महीप नाक रगड़ते हैं।' बिजली के संपादक पं. ओंकारनाथ ने कामिनी से कहा, 'जिसमें दया और विवेक है, वही मेरी रानी है। खुशामद से मुझे घृणा है। ...दौलत के पुजारी तो गली-गली मिलेंगे, मैं सिद्धांत के पुजारियों में हूँ।' ओंकारनाथ के संबंध में मिस मालती ने राय साहब को जवाब दिया, 'जो व्यक्ति कर्म और वचन में सामंजस्य नहीं रख सकता, वह और चाहे जो कुछ हो, सिद्धांतवादी नहीं है।' मालती के श्रेष्ठता संबंधी प्रश्न पर मेहता 'समाज की दृष्टि से विवाहित जीवन को, व्यक्ति की दृष्टि से अविवाहित जीवन को' श्रेष्ठ समझते हैं। कार्यक्रम के दूसरे दिन, दूसरी टोली में राय साहब और खन्ना शिकार पर गए। मालती के संदर्भ में खन्ना ने कहा, 'अगर एक लोटा जल चढ़ा देने से वरदान मिल जाय, तो क्या बुरा है।' राय साहब का मत है कि मैं उस आदमी को आदमी नहीं समझता, जो देश और समाज की भलाई के लिए उद्योग न करे और बलिदान न करे।' खन्ना का तर्क है, 'जो रमणी से प्रेम नहीं कर सकता, उसके देश-प्रेम में